संत नामदेव के काव्य में लोकभाषा के तत्व

– डॉ. अप्पासाहेब गोरक्ष जगदाले

भक्ति साहित्य ही आध्यात्मिक लोक का साहित्य है। उसमें समता व बंधुता एवं अध्यात्मिकता ही स्वतंत्र है। संत नामदेव की वाणी से मध्यकालीन साहित्य को प्रशस्त किया। इस काव्य से साहित्य की विविध विधाओं का आविष्कार हुआ। संत नामदेव मूलतः मराठी भाषिक थे,उनकी काव्यरचना मराठी में 'श्रीनामदेवगाथा' के नाम से प्रचलित है।जिन्होंने मराठी के साथ हिन्दी में लोकभाषा का स्वीकार ही अभिव्यक्ति के रूप में किया। जिसमें आमजन को समझ आने के लिए मराठी के लोकभाषा का प्रयोग हुआ है। संत नामदेव ने मराठी के साथ हिन्दी में काव्य रचना की थी उसके परिप्रेक्ष्य में डॉ.भगीरथ मिश्र ने लिखा है –" उत्तरीभारत में उन्हें अपने उपदेशों और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए वहाँ की भाषा हिन्दी को ही अपनाना पड़ा। मराठी भाषा वहाँ का माध्यम नहीं बन सकती थी। अतएव हिन्दी में लिखे गए उनके जो पद है वे उनके उत्तर भारत के प्रवास के समय लिखे गए है और वे भाषा और भावना, दोनों में ही उनकी मराठी रचनाओं से भिन्न हैं क्योंकि महाराष्ट्र की अपेक्षा उत्तरी भारत और पंजाब की स्थिति में भी इस ढंग की भिन्नता विद्यमान थी।" (संत नामदेव जीवन –कार्य आणि मराठी–हिन्दी काव्य खंड, डॉ.अशोक कामत, पृ 44) संत नामदेव ने अनुपम भक्ति रस से तीर्थयात्रा का स्वरूप बहुजन समाज को यथावत समझ में आने के लिए प्रथमतः महाराष्ट्र की सीमा के बाहर यात्रा की और उसके बाद के संत को एक आदर्श दिया। संत की यात्रा में लोकभाषा एवं संगीत का अटूट संपर्क दृष्टव्य दिखाते हुए गुरूवाणी के विद्वान डॉ.मनमोहन सहगल ने –"यात्राओं को लोक चेतना यात्रा कहते हैं।" (लोकचेतना और आध्यात्मिक साधना के वाहक श्री गुरू नानक देवजी, डॉ.कुलदीप चंद अग्निहोत्री, पृ.79)

संत नामदेव ने मराठी में पहली बार तीर्थयात्रा से सांस्कृतिक क्रांति कराकर एक तरह से व्यवस्था का विद्रोह किया। उसके साथ ही बहुजन समाज को भक्ति का अधिकार प्राप्त करने की स्वतन्त्रता दी। क्यौंकि तत्कालीन समाज में लोकभाषा ही लोगों के हृदय को सहजता छू जाती है। मध्ययुग की भाषा का अधिक श्रेय ही भक्ति–आन्दोलन का है। उसमें अधिक संत ने भक्ति को अपनाकर लोकभाषा का प्रयोग काव्य के लिए किया। मध्ययुगीन काव्य में संस्कृत व प्राकृत भाषा ही विद्यमान थी परंतु संतों ने संस्कृत भाषा को विरोध किया होता तो भारत में संत नहीं हो पाते थे और हो भी जाते तो उनका त्वचिंतन, धर्मचिंतन सामान्य लोगों को आसानी से समझ नहीं आ पाता था। उस समय सरकारी कामकाज की भाषा अरबी–फारसी ही हुआ करती थी और लोगों का फारसी भाषा के प्रति ही अपनापन था। क्यौंकि उससे मनुष्य को राज दरबार में राजकीय हक्क मिल जाता था परंतु संतों को पद–प्रतिष्ठा की कोई आस नहीं थी। धार्मिक ज्ञान ही संस्कृत भाषा में होने से आमजन से दूर ही रखा गया। यह अज्ञान की खाई में पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ ही जा रही थी। संत ने काव्य में सामान्य भाषा का प्रयोग जनता जनार्दन के उद्धार लिए किया। तत्कालीन धर्म का पूरा सूत्र ब्राह्मणवादी सत्ता के हाथ में था और उसे ही सामाजिक न्याय का दर्जा प्राप्त हुआ था। इससे बहुजन लोगों का ईश्वर एवं धार्मिक ग्रंथ से दूर ही रखा गया। जिससे संत ज्ञानेश्वर ने संस्कृत भाषा की तरफ पीठ फिराकर लोकभाषा मराठी में सन् 1212 में 'ज्ञानेश्वरी' नाम की रचना की उससे समस्त मनुष्य का सर्वांगीण विकास हुआ। 'वारकरी पंथ' के जन बड़े ही उत्साह से 'वारी' में गायन करते हैं। विट्ठल की भाषा उनका भक्त पुंडलीक ही जान सकता है। इस विट्ठल भक्ति एवं भाषा के संवाद से संत नामदेव ने अपना एक विश्व निर्माण किया है। उनके काव्य में तेलुगू,मराठी, हिन्दी, कन्नड़ के लोक भाषा के शब्द प्रयुक्त होते है। उनमें अट्ठावीस युग बीत गए दोनों में संवाद ही नहीं हुआ पर वह भक्त की ओर निस्वार्थ भाव से देख रहा है। भक्त को कार्य नित्य सत्यता के साथ

करने का आव्हान करता है और हम कुछ भी गलत दिशा की ओर अग्रसर होते हैं तो विट्ठल नाम से हमें आत्मविश्वास होकर अपने जीवन को सही दिशा देता है।

विट्ठल कानडे बोलू जाणे। त्याची भाषा पुण्डलिक नेणे।।

यूगे अठ्ठावीस जाली। दोघा नाही बोलाबोली॥

कर ठेवूनी कटावरी। उभा भिवरेच्या तीरी॥

नामा म्हणे स्वामी माझा। उभा भक्तिचिया काजा॥ (सकल संत नामदेवगाथा अभंग सं372,पृ.145)

संत नामदेव विट्ठल की सगुण मूर्ति का पूजन को व्यक्त करता है। मराठी में ईश्वर को देव तथा माता को माय ही लोकभाषा कहा जाता है।

अवताराची राशी तो हा उभा विटेवरी।

शंखचक्रगदापसहीत करी हरी॥

देखिला देखिला देवाहि देव बरबा।

समाधाने जीवा पाहता वाटे गे माये॥

सगुण चतुर्भुज रूपड़े तेज पुंजालती।

वंदी चरणरज नामा विनबीतसे पुढ़ती गे माये॥ (सकल संत नामदेवगाथा अभंग सं 441, पृ.181

संत नामदेव के पहले 'महानुभव पंथ' ने मराठी भाषा का धव्ज बहुत उंचाई पर ले गए परंतु लोगों में मेल–मिलाफ़ की वृत्ति कम ही पड़ गई। नाथ संप्रदाय से प्रभावित वारकरी के समान

महानुभव कवियों ने लोकभाषा को प्रधानता दी परंतु उसमें संन्यास धर्म का स्वीकार करना अनिवार्यतः होने से सर्वसामान्य जनता उससे प्रभावित नहीं हो पायी। उसमें कर्मकांड बढ़ने से समाज में प्रगतशीलता का मार्ग अवरुद्ध हुआ। संत नामदेव पर नाथ संप्रदाय का प्रभाव विद्यमान था। कबीर के पदों की भाषा में प्रखरता अधिक दिखाई देती है। वह चाहे पौराणिक या धर्म की तथा बाह्यआडम्बर की बात ही क्यों न रही हो। ऐसी स्थिति में भक्ति और जीवन के एकत्व का मार्ग तथा शुद्ध आचरण को बतानेवाला संत नामदेव के समान कोई महापुरुष नहीं था। संत नामदेव के बाद भी उनके शिष्यमंडली ने समाज को योग्य दिशा देकर लोकमन में स्थान प्राप्त किया। संत ज्ञानदेव–नामदेव ने यात्रा करके अपने जीवानुभव को अभंग या पदों में व्यक्त किया। वह भी सीधी–सरल भाषा से सामान्य जन को आसानी से समझ आए। लोकभाषा मराठी जनमानस के आत्मा की भाषा है। एक समुदाय की भाषा है सरल एवं परंपरा, खान–पान, लोकभाषा के तत्त्व आस्था श्रद्धा से गाये जाते हैं परंतु वहीं अंग्रेजी भाषा से गायन करते तो जनता को समझने में कठिनता हो जाती थी इसलिए साहित्य ही लोक से जन्मा है। अभंग का लोक तत्व ग्रामीण , देशकाल वातावरण, अलंकार आदि मराठी भाषा के आरंभिक रूप से तीन प्रकार मिलते हैं। संत नामदेव के समय में पहला महाराष्ट्री प्राकृत का आविष्कार हो गया था । दूसरा अपभ्रंश और तीसरा मराठी भाषा है। संत नामदेव के काव्य में मराठी ही लोकचेतना और लोकधर्मी है।

संत नामदेव के बाद मराठी संत एकनाथ और संत रामदास ने देशीभाषा का स्वीकार कराकर आध्यात्मिकता का ज्ञान हिन्दी क्षेत्र को समझाने का प्रयास किया परंतु संत नामदेव के समान लोकप्रियता प्राप्त नहीं कर पाये। संत नामदेव ने जनता जनार्धन के साथ अधिक लोक प्रियता प्राप्त की थी। संत नामदेव के समकालीन संत ज्ञानेश्वर ने उनके कार्य को ध्यान में रखते हुए, संत नामदेव को 'संत शिरोमणि' के नाम से अभिहित किया है। उस समय ही देशी अपभ्रंश से लोकभाषा प्रचलित हो रही थी। संत नामदेव के काव्य में संस्कृत का प्रयोग दिखाई नहीं देता है। उनका पूरा काव्य प्रेम

और माधुर्य के लेखन से प्रयुक्त होता है। संत नामदेवयुगीन ही ब्रजभाषा प्रस्फुटित होने लगी थी और उसका स्वतंत्र काव्य के रूप 14–15 शताब्दी के बाद आरंभ होता है। संत नामदेवकालीन समाज का अधिक वर्ग के लोग अनपढ़ थे। संत नामदेव ने उस समय में आमजन को समझ आए उस लोकभाषा के माध्यम से धर्मकीर्तन का आरंभ किया और लोगों में जागृति फैलाने का कार्य किया।

मन प्रतीति नहीं रे प्रानी औरन कूं समझाइ।

लोकन कू वैकुंठ पठावै, आपण जमपुरि जांइ

जानि बूझि विष षाइये रे, अंधे अंधा हाथि।

देखत ही कूंवै पडै,अंधो अंधा साथि।। (सकल संत नामदेवगाथा अभंग सं.2298,पृ.858)

जिस प्रकार संत नामदेव का अंधा कहने से तात्पर्य उस अज्ञानी व्यक्ति से है। वह स्वयं अज्ञानी होने से दूसरे को गड्ढे में गिरनेवाला मार्ग दिखा सकता है। इसलिए समाज में जीवन व्यापन करते समय हमें सरहपा की बात का पुनःस्मरण कराके जाग्ररित करते हैं। संत नामदेव के मराठी काव्य में 'यवन' या यवनी शब्द का प्रयोग मुस्लिम शासक के लिए प्रयुक्त हुआ है। उन्होने उत्तर भारत की यात्रा में में मुस्लिम शासक द्वारा हिन्दू धर्म के देवता को तोड़ा जा रहा था। संत नामदेव के काव्य की भाषा में सीधी–सरल शब्द के प्रभुत्व पर वत्सल ,करुण एवं अद्भुत रस सहजता से व्यक्त किया है।

राजे भ्रष्ट्र यवन झाले। ठायी दोष घडले।।

मांग यीही अवतार घेतले। कलिदोष हरावया॥ (संत नामदेव परिवाराची कविता, डॉ शिवाजीराव नि.मोहिते पृ.17)

संत नामदेव के काव्य की भाषा प्राकृत मराठी रही है और वही मराठी भाषा का शुरुवाती दौर ही कहा जा सकता है। जिसे पाठक को समझने कठिनता प्रतीत होती है। संत नामदेव ने कृष्णलीला के प्रसंग में मराठी, कानड़ी, कोकणी, गुजराती, हिन्दी आदि भाषा के शब्द के मिलते हैं और उसके साथ सखियाँ अनेकता में एकता की बात भी स्पष्ट होती है।

गौलनी ठकविल्या गौलनी ठकविल्या ।
एक एक संगतीने। मराठी कानडिया।
एक मुसलमानी। कोकणी गुजरनी।
अशा पाँचीजणी गौलनी टकविल्या।
लड़ोवा गोविंदा। लड़ोवा गोविंदा।।
निरवाणि आज। आड़चाल्लों पडचाल्लों ।
शिर फोडया न कोडी। मारी कान्हय्या।
पानी खेल्या न खेलो।
देखरे कहनय्या देखरे कहनय्या। मैं इज्यतकी बड़ी।
कदम पकडूगी। मैया कूटोजुड़ी।
मेरी चुनरी दे। मेरी ले दुल्ल्ड़ी। (सकल संत नामदेवगाथा अभंग सं.263,पृ.98)

संत नामदेव के काव्य में अलग–अलग प्रांत का वर्णन यात्रा करने के पश्चात ही आया है। उसमें 'गवलनी' शब्द मराठी है और जिसे हिन्दी में 'सखी' कहा जाता है। जैसे 'मैया' शब्द राजस्थानी भाषा में माता के लिए और 'दुल्ल्ड़ी' आया है वह हिन्दी में चुनरी या दुपटा को व्यक्त करता है।

संत नामदेव ने उत्तर भारत की यात्रा की थी। उनके काव्य रचना में बहुभाषीत्व ही श्रेष्ठता को उजागर किया है। जिसका समय के अनुसार उपयोग करके मानव कल्याण किया। मध्यकालीन

संतकाव्य की भाषा के प्रति विद्वान ने साधूभाषा को सर्वस्व माना है। संत नामदेव के काव्य की साधुभाषा के संदर्भ में डॉ.मा.गो.देशमुख का कथन है–"भक्तिरस से लिन हुई अभंगरचना उन्होंने सिर्फ मराठी में ही न की बल्कि अपने उत्तरार्ध जीवन में तत्कालीन सर्वसमावेशक साधुभाषा और रागदरबारी में पद रचना की वह अनेक भारतीय संतकवीयों को स्फूर्ति प्रेरणा मिली । इतना ही न होकर उसे सिख के आदिगुरु में स्थान मिला। नामदेव का भाषाप्रभुत्व देखकर महीपति ने कहा 'ज्या ज्या देशी जाती तीर्था। तैसीच तेथे करिती कविता।' " (संत नामदेव जीवन –कार्य आणि मराठी–हिन्दी काव्य खंड, डॉ.अशोक कामत, पृ.151)

संत नामदेव के मराठी अभंग की भाषा को व्यक्त होता है।

इन औसर गोविंद भजिरे । यह परपंच सवाल बिनसैगे माया का फंदन तजि रे॥ (सकल संत नामदेवगाथा अभंग सं.2380 पृ.853)

उक्त पद में गोविंद को सांसरिक जीवन व्यथित करने के साथ भजने की बात की है। उनके पद में 'परपंच' मराठी शब्द प्रयुक्त हुआ उसे हिन्दी में संसार कहा जाता है। उस अभंग में चार या दो तथा छह चरण होते हैं। उस मात्रा की संख्या पहले से तीसरे तक अठरा होती है और कंठस्थ के लिए भी आसान रहते हैं।

अभंगाची कला नाही मी नेणत। त्वरा केली प्रीत केशिराजे।।
अक्षरांची संख्या बोलिले उदण्ड। मेरु सप्रचंड शर आदि।।
सहा साडेतीन चरण जाणावे। अक्षरे मोजावी चैकचारी ।।
पहिल्यापासोनी तिसरयापर्यंत। अठरा गणित मोज आले।।
दीड चरणाचे दीर्घ ते अक्षर। मुकुक्षु विचार बोध केला।।

नामा म्हणे मज स्वप्न दिले हरि। प्रीतीने खेचरी आज्ञा केली।। (सकल संत नामदेवगाथा अभंग सं 1382 ,पृ.570)

संत नामदेव ने अभंग का लक्षण बताया है उसे वह स्वंय नहीं जानते थे परंतु केशिराजा के मार्गदर्शन से जान पाया। इससे उन्हें छन्द का ज्ञान स्पष्टता से दिखाई देता है। उसमें नया छंद, नया रूप, नयी कोमलता की भाषा साहित्य में विकसित हुई। संत नामदेव ने वाङ्मयीन काव्य छन्द में ओवी और अभंग है।

निष्कर्ष

अतः संत नामदेव की काव्य भाषा में बहुभाषितव्य का स्पष्ट दर्शन होता है। उनका मातृभाषा मराठी एवं हिन्दी के प्रति भी समान भाव विद्यमान मान था। संत के काव्य की भाषा में मधुरता होने से उनमें गायन का तत्व ही लोक से अवतरित हुआ है। जिसने मनुष्य के जीवन नयी ऊर्जा और नयो सोच की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं। हमारा कहीं बार मन बड़ा ही उदीग्न होता है। जिससे मन को संगीत सुनकर शांत का भाव प्रकट होता है। संतों के काव्य की लोकभाषा होने उन्होंने लोक संगीत के माध्यम से ही ईश्वर का महिमा गायन किया है। जिसे कहीं बार पढ़े–लिखे व्यक्ति को उसे समझने में कहीं बार कठिनाई होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.श्री नामदेव गाथा, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि सांस्कृतिक मंडल, मुंबई,वर्ष 1970

2. डॉ.कुलदीप चंद अग्निहोत्री, लोकचेतना और आध्यात्मिकसाधना के वाहक श्री गुरू नानक देवजी, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2019

3.डॉ अशोक कामत,संत नामदेव जीवन कार्य आणि मराठी–हिन्दी काव्य खंड2,गुरूकुल प्रतिष्ठान,पूने2014

4. शिवाजीराव मोहिते, वारकरी संप्रदाय आणि संत साहित्य,कर्मवीर प्रकाशन, पूने,वर्ष–2008

5.डॉ.श्रीपाल सबनीस, संत नामदेव–तुकारामांचे सांस्कृतिक संचित चेतक बुक्स, पूने,2013 पृ. 87

6. पेंडसे,श. द., महाराष्ट्राचा भागवत धर्म ज्ञानदेव आणि नामदेव, कॉन्टीनेन्टल प्रकाशन, पूने,1998 पृ.176

7. संत साहित्य विशेषांक मई–जुलै 2014,पृ.12

8.गोविंद राजनीस नामदेव रचनावली, अमरसत्य प्रकाशन, प्रीत विहार, दिल्ली, वर्ष 2009 पृ. 46

9.देशपांडे, भी. गो.,मराठी भक्ति का साहित्य, चैखम्बा विद्याभवन प्रकाशन, वाराणासी, वर्ष 1959 पृ.80

10. बहिरट,भा.पं., भालेराव प.ज्ञा., वारकरी संप्रदाय का उदभव विकास,व्हीनस प्रकाशन,पूने 1972 पृ.सं.189

11. माचवे, प्रभाकर, संत नामदेव (जीवनी तथा काव्य), हिन्दी पॉकेट बुक प्रा.लि. नई दिल्ली, वर्ष 2010 पृ.सं.

जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष, शोधार्थी,हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला –176215 Email– jagadaleappasaheb@gmail.com 9089868247, 8787679094